शताब्दी का संघर्ष

(1857 ई. से 1958 ई. तक)

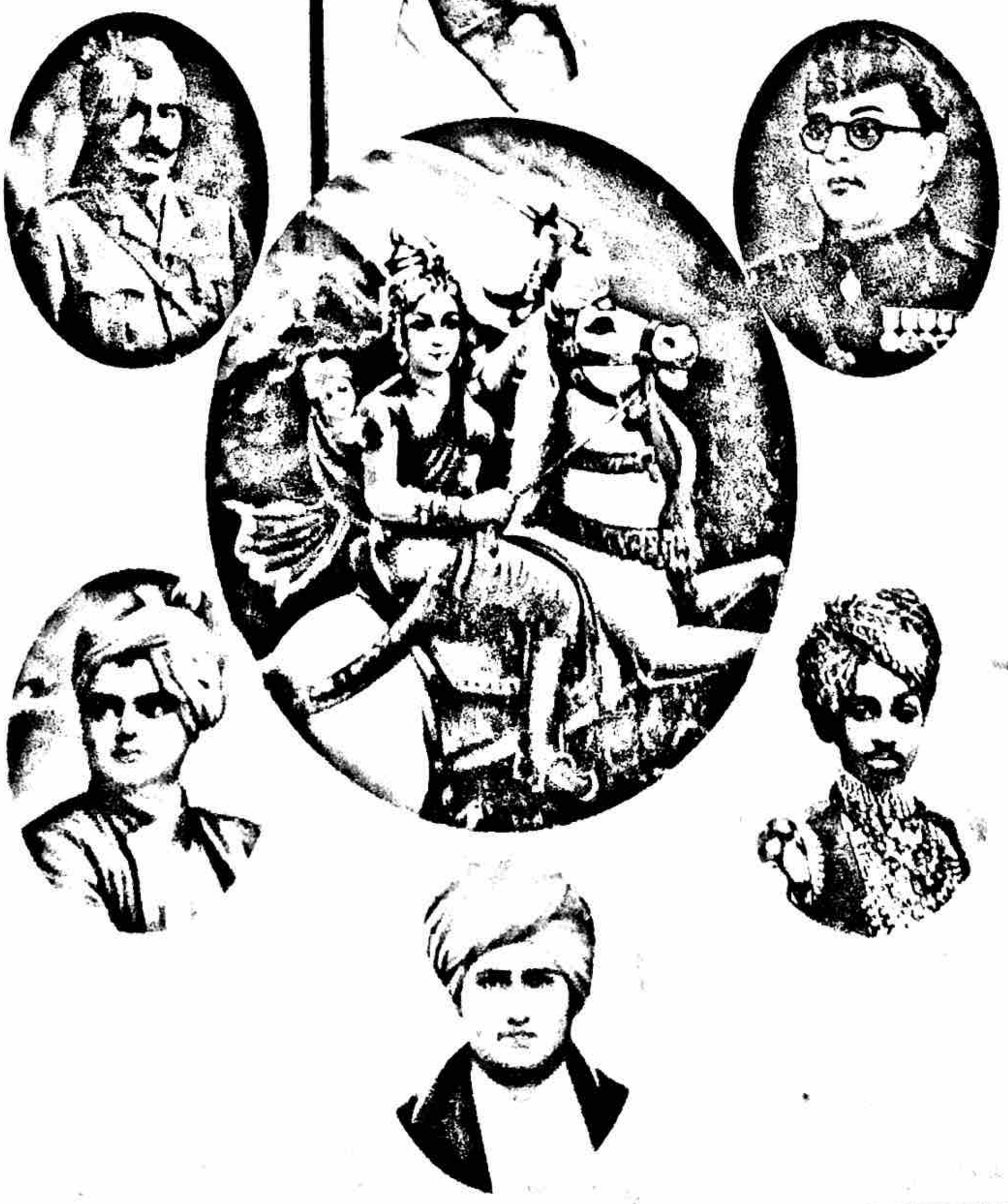

प्रधान सम्पादक

डॉ. नीलम कौशिक

सह सम्पादक

डॉ. हेमेन्द्र चौधरी

मुद्रणाधिकार © सम्पादकगण

इस पुस्तक के किसी भी अंश की किसी भी रूप में प्रतिकृति करना या किसी भी साधन-इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल या अन्य प्रकार, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या सूचना संचयन और पुनः प्राप्ति पद्धति - द्वारा प्रसारित करना सम्पादकगण/प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना मना है।

The authors of the papers are alone responsible for technical contents of the papers and references therein.

HIMANSHU Publications

हिमांशु पब्लिकेशन्स

464, हिरण मगरी, सेक्टर 11, उदयपुर 313 002 (राज.), फोन: 0294-5106186, 5106183
4379/4-B, प्रकाश हाऊस, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-2, मोबाईल: 94141-66102
Web : *himanshupublications.com;* email : *himanshupublications@gmail.com*

ISBN : 978-81-7906-663-8

संस्करण : 2017

मूल्य : ₹ 895.00

वितरक

आर्य बुक सेंटर

हॉस्पिटल रोड, उदयपुर - 313 001 (राजस्थान) ☎: 0294-2421087

15.	डॉ. विनिता श्रीमाली	प्रधान अर्जुनसिंह सहिवाला का 1857 की क्रांति में योगदान	126
16.	डॉ. अजात शत्रु सिंह शिवरती	मेवाड़ में भील आंदोलन और मोतीलाल तेजावत	130
17.	डॉ. अनिल पुरोहित	शताब्दी के संघर्ष में मारवाड के स्वतंत्रता सेनानी छगनराज चौपासनीवाला 'प्यारे साहब' का योगदान	136
18.	डॉ. श्रीनिवास महावर	स्वतंत्रता सैनानी कन्नीराम	142
19.	डॉ. जीतल राणावत	डूंगरपुर का स्वतंत्रता सेनानी – देवराम शर्मा	145
20.	प्रो. नीलम कौशिक	"नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान"	150
21.	ड़ॉ. गिरीश नाथ माथुर	मेवाड़ में जनजागृति एवं स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज का योगदान	156
22.	प्रो. शिव कुमार भनोत	राजस्थान में 1857 की क्रांति की पृष्ठभूमि के निर्माण में 1818 की संधियों की भूमिका	162
23.	सुश्री कनिका भनोत	सन् 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम एवं अजमेर – मेरवाडा : एक अध्ययन	173
24.	प्रो. एस.पी. व्यास	जयनारायण व्यास का लोकनायकत्व एक उत्तर – आधुनिक विश्लेषण	185
25.	सुश्री सुहानी चौबीसा	वागड़ में भील आन्दोलन	195
26.	डॉ. हेमेन्द्र चौधरी	राष्ट्रीय विचारधारा एवं मेंवाड़ का स्वतंत्रता आन्दोलन (1857 ई.–1947 ई.)	202
27.	कान्तीलाल नीनामा	वागड़ क्षेत्र में जन चेतना – आर्य समाज के संदर्भ में	211
28.	निमेश चौबीसा	डूँगरपुर रियासत में स्वतंत्रता संग्राम के नायक : शिवलाल कोटडिया	221
29.	डॉ. जय श्री रावल	महिला स्वतन्त्रता सैनानी– श्रीमती शान्ता त्रिवेदी (व्यक्तित्व एवं कृतित्व)	228
29.	Prof. T.K. Mathur	A Perspective of the Bhil Movement in Southern Rajasthan in the Backdrop of 1857	234
30.	Vagish Sharma	A Few Active Women Participants In National Freedom Movement from	243

शताब्दी के संघर्ष में मारवाड के स्वतंत्रता सेनानी छगनराज चौपासनीवाला 'प्यारे साहब' का योगदान

डॉ. अनिल पुरोहित*

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अत्यन्त विस्तृत है जिसमें अनेक महानायकों, नायकों, समाज के विभिन्न वर्गो के स्त्रियों – पुरूषों का योगदान अतुलनीय है। यद्यपि यह स्वतंत्रता संग्राम किसी एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों के समुहों से ही अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाया, फिर भी भारतीय जन–मानस के पटल पर कुछ ही ख्याति प्राप्त व्यक्तियों के नाम अंकित है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य राजपूताना में मारवाड क्षेत्र के स्थानीय स्वतंत्रता सैनानियों के भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान को स्थापित करना है। इस शोध आलेख के लिये आधार सामग्री 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में राजपूताना एवं दिल्ली से प्रकाशित समाचार पत्रों से प्राप्त की गयी सामग्री, जो वर्तमान में राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, जोधपुर जिला अभिलाखागार, जोधपुर, निजी संग्रहों में उपलब्ध है। इन समाचार पत्रों में जोधपुर से प्रकाशित लोक जीवन, ब्यावर से प्रकाशित तरूण राजस्थान, दिल्ली से प्रकाशित प्रिंसली इण्डिया (उर्दू), कानपुर से प्रकाशित दैनिक प्रताप, बम्बई से प्रकाशित द टाइम्स ऑफ इण्डिया आदि प्रमुख है। इसके अतिरिक्त निजी संग्रहों में रामदत–सरदारमल थानवी संग्रह की रिपोर्टस, पत्र–पत्रिकाएं आदि प्रमुख है। इसी काल में जारी एडमिनिस्ट्रेटीव रिपोर्ट्स को आधार सामग्री के रूप में प्रयोग में लिया गया है।

प्रारम्भिक जीवन

मारवाड के जन आन्दोलन से जुडे व्यक्तियों एवं सामाजिक राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं में छगनराज चौपासनीवाला का नाम प्रमुख है।

वे मारवाड की प्रजा के जन अधिकारी हेतु संघर्ष करने वाले प्रमुख कार्यकर्त्ता थे। आपका जन्म 26 मई, 1912 ई. को जोधपुर में हुआ था।[1] आप

---

* महा-आचार्य, बालिका महाविद्यालय, जोधपुर।

जोधपुर के एक सामान्य पुष्करणा परिवार से जुडे थे। तीन वर्ष की आयु में ही आपके माता–पिता का देहान्त हो गया था, अतः आपका पालन–पोषण मामा मनशाराम जी ने किया, जो उस समय परबतसर के खुदियास थाने में थानेदार थे।[2] कुछ समय पश्चात् शिक्षा हेतु आपका दाखिला जोधपुर के पुष्टिकर विद्यालय में करवा दिया गया, जहाँ आपने छठी कक्षा तक अध्ययन किया।

राजनैतिक गतिविधियाँ

अपने विद्यार्थी जीवन के दौरान ही चौपासनीवाला श्री जयनारायण जी व्यास, श्री मानमल जैन, श्री अभयमल जैन, श्री आनन्दराज सुराणा जैसे नेताओं के सम्पर्क में आये।[3] उस काल में जोधपुर में समाचार पत्र ब्यावर, दिल्ली एवं कानपुर से आया करते थे,[4] जिनमें राजनैतिक घटनाओं की जानकारी हुआ करती थी। उन्हीं में जोधपुर से जुडी खबरें भी प्रकाशित होती थी। स्वतंत्रता संग्राम से जुडी खबरें आपको अत्यधिक प्रभावित करती थी। शीघ्र ही आप यूथलीग, बालभारती सभा, सिविल लिबर्टी एसोसिशन के नेताओं के सम्पर्क में आएं एवं इन संस्थाओं से जुड कर इनके कार्यक्रमों में सक्रियता से भाग लेने लगे।[5] आपके सहभागियों में श्री सुमनेश जोशी, श्री जयपाल शर्मा जैसे नेता प्रमुख थे।

कांग्रेस के कराची अधिवेशन के पश्चात् सम्पूर्ण राजपूताने में प्रभात फेरियाँ निकालने का निर्णय लिया गया। इस समय सरकार ने प्रभात फेरियों पर प्रतिबंध लगा रखा था, फिर भी जोधपुर में चौपासनीवाला अभयमल जी जैन, श्री मानमल जी जैन, सुगन गरसां, गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' आदि के साथ इन फेरियों में जाने लगे।[6] गणेशीलाल जी अच्छे कवि थे, उनकी राष्ट्र प्रेम की कविताएँ इन फेरियों में गायी जाती थी।[7] चौपासनीवाला ने शीघ्र ही इन कविताओं का संग्रह करके उसे गरीबों की आवाज नामक पुस्तक के नाम से छपवा दिया, जिसमें उन्हें सुमेर प्रेस के संचालक सरदारमल जी थानवी ने अत्यधिक सहयोग प्रदान किया था।

उस समय चौपासनीवाला एक युवा सक्रिय कार्यकर्ता थे, उन्होंने उस समय के जोधपुर के अनेक नौजवानों को राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुडने हेतु प्रेरित किया। वे जोधपुर के बाजारों एवं घरों की छतों पर आम–सभायें कर लेते थे। इसी दौरान उन्होंने यूथलीग के कुछ नेताओं के साथ कुछ विद्यार्थियों को जोडकर बाल भारती सभा की स्थापना की।[10] शीघ्र ही बालभारती सभा ने एक आम सभा का आयोजन किया। इस दौरान धारा 144 को लागू कर दिया गया। तत्कालीन कोतवाल (जोधपुर) धगनराज भण्डारी ने चौपासनीवाला को सभा ना करने की चेतावनी दी, किन्तु चौपासनीवाला ने धारा को तोडते हुए यहाँ सभा की। इस कारण उन्हें कुछ समय जेल में रहना पडा।[11]

इस दौरान यूथ लीग ने आह्वान किया कि, कार्यकर्ताओं को गांवों में जाकर भी राष्ट्रीय चेतना को फैलाना होगा। तब जनवरी, 1932 में श्री मांगीलाल जैन, श्री गैरालाल जी जैन, श्री सुगनचन्द जी एवं चौपासनीवाला साइकलों पर सवार होकर पाली की ओर गये।[12] पाली पहुँचने के बाद पाली के निकट गूंदोज, गुडा एंदला, कीखा एवं अंत में चांचोडी गये। फिर वे पुनः पाली लौट आये तथा यहाँ गूंद के कटले में एक आम सभा की।[13] पाली पाली के तात्कालिक थानेदार सलेराज भण्डारी ने सभा को रोकने के लिये अत्यधिक पुलिस बुला रखी थी। जब थानेदार एवं मानमल जैन में सभा को लेकर विवाद होने लगा तो, चौपासनीवाला ने तुरन्त ही मंच से सभा को संबोधित करना प्रारम्भ कर दिया।[14] तब पुलिस ने मंच के नीचे खडी प्रजा को पीटना शुरू कर दिया, किन्तु फिर भी चौपासनीवाला का पूरा भाषण हुआ। पाली में जेठमल राठी ने इन नेताओं को अत्यधिक सहयोग प्रदान किया था। अगले दिन ये लोग रोहिट, लूणी, मोगडा आदि गांवों से होते हुए जोधपुर आ गये।[15]

जोधपुर लौटने के पश्चात् यूथलीग ने यह निर्णय लिया कि 26 जनवरी, 1932 को राष्ट्रीय ध्वज जोधपुर में भी फहराया जायें। झण्डारोहण की जिम्मेदारी चौपासनीवाला को दी गयी।[16] यूथ लीग का कार्यालय जोधपुर में सर्राफा बाजार में था। निर्धारित दिवस को अत्यधिक पुलिस वहाँ पहुँच गयी एवं जनता एवं पुलिस के मध्य अत्यधिक विवाद होने लगा। अन्ततः चौपासनीवाला ने जूनी मण्डी में घनश्याम जी के मंदिर के सामने राष्ट्रीय ध्वज को फहरा दिया।[17] तब पुलिस उन्हें पकडकर सदर कोतवाली ले गयी, किन्तु संध्याकाल तक उन्हें छोड दिया गया। कुछ समय पश्चात् आपको धारा 144 को तोडने के अपराध में दो माह का कारावास दिया गया।[18] इसके पश्चात् वे कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लेने हेतु प्रयास करने लगे। जेल से रिहा होने के पश्चात् आप ब्यावर एवं अजमेर में रामनिवास चौधरी के सम्पर्क में आये, जो देहली कांग्रेस में जाने वालों का मार्गदर्शन करते थे।[19] किन्तु आप को इस कार्य में सफलता नही मिली। दिसम्बर 1933 एवं जनवरी 1934 का समय चौपासनीवाला के लिये काफी महत्वपूर्ण समय था। इस काल में राजपूताना के देशी राज्यों को कार्यकताओं का सम्मेलन हुआ, जिसकी अध्यक्षता सेठ अमृतलाल ने की, उनके साथ में देशी प्रजापरिषद् के प्रधानमंत्री श्री मणिकशंकर त्रिवेदी भी आये थे।[20] इसके अतिरिक्त भंवरलाल सर्राफा, मानमल जैन, श्री नृसिंहदास, सुजान भण्डारी आदि सम्मिलित हुए। चौपासनीवाला को सभी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

कुछ समय पश्चात् अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद का अधिवेशन दिल्ली में आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता दक्षिण भारतीय कांग्रेस नेता श्री नटराजन ने की।[21] इस अधिवेशन के लिये श्री अमृतलाल ने विशेष निमंत्रण चौपासनीवाला को भेजा था। इसके अतिरिक्त उन्हें वहाँ पर मंच से सभी को संबोधित करने का सौभाग्य भी मिला।[22] अधिवेशन के बाद जोधपुर

आने पर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तथा रातों – रात शेरगढ के किले ले जाया गया, जहाँ छः माह तक उन्हें बंदी बनाये रखा गया।[23] 1937 के काल में वे जोधपुर प्रजामंडल के सचिव थे। उस समय जयनारायण व्यास की पुस्तक 'मारवाड की अवस्था' रखने के कारण उन्हें दो माह के लिये कैद किया गया।[24] 1938 में कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन हुआ। इसमें उन्होंने सकियता से भाग लिया एवं वापस जोधपुर लौटने पर उन्हें दो माह कारावास में रहना पडा।[25] 1940 में मारवाडा लोक परिषद् के आंदोलन में आप पुनः गिरफ्तार हुए[26] एवं दो वर्षों का कारावास दिया गया, किन्तु शीघ्र ही मुक्त कर दिया गया। 1942 में मारवाड में उत्तरदायी शासन की मांग के लिये जो आंदोलन हुआ, उसमें चौपासनीवाला की सकिय भूमिका थी, उसमें भी उन्हें आठ माह की कैद हुई थी। इसके पश्चात् 1947 तक वे सकिय रूप में स्वतंत्रता आंदोलन से जुडे रहे। 1947 में जागीरदारों के शोषण के विरूद्ध आपने डाबडा क्षेत्र में सम्मेलन किया। यहाँ आप पर सामन्तों ने हिंसात्मक कार्यवाही करवा दी, जिसमें आप बुरी तरह घायल हुए।[27] फिर भी आपने आंदोलन जारी रखा।

समाज सुधारक

1932 में गांधीजी ने हरिजनों के उद्धार हेतु आमरण अनशन प्रारम्भ किया। उन्होंने आह्वान किया कि उपवास करें एवं खादी बेचे।[28] हरिजनों से भेदभाव ना करें। चौपासनी वाला ने गांधीजी के हरिजन आंदोलन में जोधपुर क्षेत्र में अत्यधिक सकिय सहयोग प्रदान किया। वे स्वयं इस समय संचालित होने वाली भोलिवांय क्षेत्र में स्थित हरिजन विद्यालय में अध्यापन के लिये जाया करते थे।[29] उनके इस कार्य में श्री अचलेश्वर प्रसाद, श्री अभयलाल जैन एवं श्री मानमल जैन ने भी सहयोग प्रदान किया था। 1934 में जब गांधीजी अजमेर, ब्यावर, लूणी होते हुए कराची जाने वाले थे, तब चौपासनीवाला ने स्थानीय नेताओं के साथ हरिजन आंदोलन में सहयोग करने हेतु धन इकट्ठा करके लूणी में गांधीजी को भेंट किया।[30] चौपासनीवाला ने जन सहयोग हेतु भी कई कार्य किये। उन्होंने जोधपुर में गुरों के तालाब के पास की भूमि पर अपने सहयोगियों के साथ कृषि की, जिससे प्राप्त धन को हरिजनों की शिक्षा, महिला शिक्षा, सामाजिक बुराईयों को दूर करने में प्रयोग में लिया।[31] इसी काल में जोधपुर के एक जलाशय बाईजी तालाब की नहर टुट गयी, जिरो सारकार ठीक नहीं करवा रही थी एवं आमजन को अत्यधिक परेशानी हो रही थी। चौपासनीवाला ने इसकी मरम्मत के लिये आन्दोलन किया, जिसके कारण उन्हें एक वर्ष तक नजरबंद कर दिया गया।[32]

खादी से लगाव

उस समय जोधपुर में मात्र भंवरलाल जी सर्राफ के पास ही चर्खा संघ की एजेंसी थी।[33] उस रामय खादी बेचने पर रोक थी। चौपासनीवाला ने श्री भंवरलाल सरार्फ से खादी ली, जब चौपासनीवाला खादी बेचने कबूतरों के चौक तक आये तो, पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया एवं सदर कोतवाली ले जाया गया। अगले कुछ घण्टों में ही उन्हें मुक्त भी कर दिया गया। 1934 में जलियांवालाबाग की याद में 6 अप्रेल से 13 अप्रेल तक राष्ट्रीय सप्ताह मनाया गया। इसमें प्रभात फेरियां निकाली गयी, जिनका आयोजन स्वयं चौपासनीवाला ने किया।[34] इस समय भंवरलाल सरार्फ जेल में थे, इस कारण जोधपुर में खादी प्रचार का काम रूक गया था। तब जोधपुर में खादी प्रचार का महत्वपूर्ण कार्य अमर शहीद बालमुकुंद बिस्सा ने किया एवं उन्होंने गांछा बाजार में खादी की एक बडी दुकान ही स्थापित कर दी।[35] इससे चौपासनीवाला को अत्यधिक सहयोग प्राप्त हुआ।

चौपासनीवाला ने निष्ठा से राष्ट्र की सेवा की। आप अंधविश्वासों से ऊपर उठकर हरिजनों की सेवा में लगे रहे। सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध व्यास जी के गीतों से चेतना जगाते रहे। आप वर्षों तक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। आपने जोधपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर भी काफी वर्षों।तक कार्य किया। राष्ट्रीय आन्दोलन में अपने निःस्वार्थ सहयोग के कारण राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार ने ताम्र–पत्रों से सम्मानित भी किया।[36] 26 जून 1985 को चौपासनीवाला प्यारे साहब का देहान्त हो गया। अंतिम संस्कार के समय राज्य सरकार की ओर से उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर प्रदान किया गया।[37]

सन्दर्भ सूची

1. सूरजप्रकाश 'पापा', मारवाड लोक परिषद् का उद्‌भव एवं विकास, राजस्थान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी समिति, जयपुर, 2001, पृ. 91
2. लोक जीवन, (समाचार पत्र), 8–14 नवम्बर, 1980, वर्ष 33, अंक 18–19, दिपावली विशेषांक, पृ. 5ए
3. वहीं
4. वही
5. सूरजप्रकाश 'पापा', पूर्वोक्त
6. लोक जीवन, (समाचार पत्र), वर्ष 33, अंक 21, 28 नवम्बर, 1980, पृ. 3
7. वहीं
8. वहीं
9. वहीं
10. मानमल जैन एवं छगनराज चौपासनीवाला के मौखिक संस्मरण, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

11. लोक जीवन, (समाचार पत्र), वर्ष 33, अंक 21, 28 नवम्बर, 1980, पृ. 3
12. वही
13. वही
14. वही
15. वही. पृ. 4
16. वही
17. वही
18. लोक जीवन, (समाचार पत्र), वर्ष 33, अंक 22, 5 दिसम्बर, 1980, पृ. 2
19. वही
20. वही. पृ. 3
21. लोक जीवन, (समाचार पत्र), वर्ष 33, अंक 22, 12 दिसम्बर, 1980, पृ. 3
22. वही
23. वही
24. द हिन्दुस्तान टाइम्स, बम्बई, 4 मार्च, 1938
25. पुलिस रिपोर्ट संख्या 810/25, दिनांक 22 मार्च, 1938, फाइल संख्या 21/ए, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
26. जोधपुर मुख्यमंत्री का ओदश, संख्या 54115, दिनांक 30 मार्च, 1940, फाईल संख्या 43/1/एफ
27. प्रजासेवक (समाचार पत्र), दिनांक 15 मार्च, 1947
28. लोक जीवन, (समाचार पत्र), वर्ष 33, अंक 22, 12 दिसम्बर, 1980, पृ. 3
29. वही
30. लोक जीवन, (समाचार पत्र), वर्ष 33, अंक 23, 12 दिसम्बर, 1980, पृ. 3
31. लोक जीवन, (समाचार पत्र), वर्ष 33, अंक 24, 19 दिसम्बर, 1980, पृ. 3
32. जोधपुर सरकार का नाटिफिकेशन, संख्या 15208, दिनांक 24 सितम्बर, 1936
33. लोक जीवन, (समाचार पत्र), वर्ष 33, अंक 22, 5 दिसम्बर, 1980, पृ. 3
34. लोक जीवन, (समाचार पत्र), वर्ष 33, अंक 24, 19 दिसम्बर, 1980, पृ. 3
35. वही
36. सूरजप्रकाश 'पापा' पूर्वोक्त, पृ. 93
37. वही

❑❑❑